JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम के शैक्षिणक विचारों की विज्ञान प्रौद्योगिकी में उपादेयता का अध्ययन“

डॉ. सुनील कुमार यादव (असिस्टेंट प्रोफेसर)

सत्य प्रकाश यादव (शोध छात्र)

श्री दुर्गा जी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

चण्डेश्वर, आजमगढ

सारांश:

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के विचार पर आधारित शिक्षा की व्यवस्था कैसी होनी चाहिए। आगे आने वाली पीढ़ी को किस प्रकार की शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। डॉ0 कलाम के अनुसार शिक्षा को किस प्रकार उपयोगी बनाया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा किस तरह से पूरे विश्व मंच सुख शांति कायम रखा जा सकता है। यहाँ पर डॉ॰ कलाम के इन विचारों को प्रस्तुत किया गया।

कुट शब्दः डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, शैक्षिक विचार, विज्ञान प्रौद्योगिकी, वर्तमान परिप्रेक्ष्य

1. प्रस्तावना:

शिक्षा आपको शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से विकसित करने में मदद करती है। ऐसा करके हम वर्तमान जीवन को आसान और अधिक सुखद बनाने में मदद करते हैं और आने वाली पीढ़ियों के जीवन को आसान बनाने में भी मदद करते हैं। यदि आप एक सफल जीवन चाहते हैं तो शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। अतीत में हमारे देश में शिक्षा, मूल्यों और कौशल पर आधारित थी। जिससे वर्तमान पीढ़ी व आने वाली पीढ़ियों को इसका लाभ मिल सके। लेकिन आज की दुनिया में शिक्षा में बहुत विविधता है। शिक्षा के कई प्रकार हैं और यह तय करना कठिन हो सकता है कि कौन सा आपके लिए सबसे उपयुक्त है। आज की दुनिया में

सीखने से जुड़ी कई चुनौतियां हैं। उदाहरण के लिए कुछ वैज्ञानिक और इंजीनियर शिक्षा में सुधार के नए तरीकों पर काम कर रहे हैं। ज्ञान के निरंतर विकास से लाभान्वित होकर शिक्षा में निरंतर परिवर्तन होता रहा है। कौशल आधारित शिक्षा चीजों को सीखने की तरह है जो चीजों को बेहतर तरीके से करने में आपकी मदद कर सकती है। यह व्यक्तिगत है, क्योंकि यह आपको एक पूर्ण व्यक्ति बनने में मदद करता है और यह समाज और राष्ट्र से संबंधित है। कुछ चीज़ें कार्यात्मक होती हैं, जिसका अर्थ है कि वे हमें अपना काम करने में मदद करती हैं या वह करती हैं जो हमें करने की आवश्यकता होती है। अन्य चीजें व्यक्तिगत हैं, जिसका अर्थ है कि वे ऐसी चीजें हैं जो हमें अच्छा महसूस कराती हैं या हमें खुश करती हैं। लेकिन यदि व्यक्ति में निहित कार्यक्षमता का उपयोग समाज और देश के हित में किया जाता है, तो यह सामाजिक कार्यक्षमता है। कार्यात्मकतावाद यह विश्वास है कि व्यक्तियों और समाजों का व्यवहार उन कार्यों से निर्धारित होता है जो ये चीजें करते हैं। भारत की शिक्षा प्रणाली ने व्यावहारिक कार्यों पर अपना ध्यान खो दिया है। छात्र पूरी तरह से शिक्षित नहीं हो पाता है क्योंकि उसके पास वह सभी कौशल नहीं होते हैं जिनकी उसे आवश्यकता होती है। शिक्षा में रचनात्मक, जीवंत और सकारात्मक होने के लिए नए विचारों को प्रयोग और व्यवहार में बदलना महत्वपूर्ण है। अब्दुल कलाम के शिक्षा और विचारों को आज के समय में निवेश करना चाहिए, खासकर उनकी कल्पना को। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शिष्टाचार के नियमों को जानना महत्वपूर्ण है। इस तरह आप बाधाओं से बच सकते हैं और सफलता प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप कम उम्र से ही रचनात्मक हैं, तो आपको जीवन में सफलता प्राप्त करने की अधिक संभावना है। जब कोई व्यक्ति स्वेच्छा से और जिम्मेदारी से काम करता है, तो वह एक अच्छा इंसान बनता है। शिक्षा हमें अधिक पूर्ण, विनम्र और दुनिया में योगदान करने में सक्षम बनाती है। यदि आपके पास सही शिक्षा है, तो आप सफल हो सकते हैं। एमनेस्टी इंटरनेशनल जैसे संगठनों के काम के कारण मानवीय गरिमा, स्वाभिमान और भाईचारा बढ़ रहा है। शिक्षा ज्ञान और कौशल प्राप्त करने पर आधारित है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सत्य की खोज करना है। शिक्षक इस खोज का केंद्र है। वह अपने छात्रों को शिक्षा के माध्यम से जीवन की सच्चाई और व्यवहार की शिक्षा देते हैं। शिक्षक वह होता है जो छात्रों को वह सब कुछ सीखने में मदद करता है जिसमें उनकी रुचि हो और यदि कोई हो तो उन्हें कठिनाई का पता चलता है। वे अपनी जिज्ञासा और अधिक जानने की इच्छा के लिए भी शिक्षक पर निर्भर रहते हैं। आप एक किताब की तरह हैं जो हमें वह सब कुछ बता सकती है जो हमें जानना चाहिए। यदि हर शिक्षित व्यक्ति शिक्षा को गंभीरता से लेता है और इसे अपने जीवन के सभी पहलुओं में दूसरों के साथ साझा करता है, तो वर्तमान 21वीं शताब्दी में दुनिया बहुत अधिक सुंदर जगह होगी। हमारी शिक्षा प्रणाली हमारे बच्चों को यह सीखने में मदद करना चाहती है कि आलोचनात्मक तरीके से कैसे सोचें और रचनात्मक बनें,

साथ ही उन्हें चुनौती भी दें। हमारे देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। वे इस समय स्कूल में हैं। मैं सोचना चाहता हूँ कि एक अच्छी शिक्षा प्रणाली को छात्रों को अपनी रुचियों का इस तरह से पता लगाने की अनुमति देनी चाहिए जो उनकी जिज्ञासा को संतुष्ट करे। स्कूलों को एक ऐसा पाठ्यक्रम बनाने के लिए तैयार रहना चाहिए जो भारत की बढ़ती आबादी की जरूरतों के अनुरूप हो। पाठ्यक्रम की आवश्यकता है कि बच्चे विकास के दौरान कुछ गतिविधियों को करें ताकि उन्हें बढ़ने और सीखने में मदद मिल सके। नॉलेज सोसाइटी का लक्ष्य आने वाली पीढ़ियों को सामाजिक परिवर्तन के सभी पहलुओं के अनुकूल बनाने में मदद करना है। अब्दुल कलाम एक ऐसे वैज्ञानिक थे जिन्होंने लंबे समय तक अंतरिक्ष अनुसंधान और रक्षा अनुसंधान पर काम किया। इस दौरान उन्होंने कई सफलताओं और असफलताओं का अनुभव किया। कई अलग-अलग देशों के विकास ने दिखाया कि अच्छे प्रबंधन कौशल से कुछ भी संभव है। डॉक्टर वह व्यक्ति होता है जो लोगों के स्वास्थ्य को देखकर और यह सुनिश्चित करके उनकी मदद करता है कि उन्हें सर्वोत्तम संभव देखभाल मिल रही है। भारत सरकार ने अब्दुल कलाम को क्रमशः 1981, 1990 और 1998 में पद्म भूषण, पद्म विभूषण और देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया। रक्षा विज्ञान के क्षेत्र में जब भी किसी को "भारत रत्न" जैसी उपाधि से सम्मानित किया जाता है, रक्षा वैज्ञान के क्षेत्र में जब भी किसी का नाम लिया जाऐगा तो पुरोधा भारत रत्न रक्षा वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का नाम सर्वोपरी होगा। वह एक नई दिशा दिखाने जा रहे थे और लाखों लोगों को बड़े सपने देखना सीखा रहे थे। वह कहते थे कि सपना वह नहीं है जो आप अपनी नींद में देखते हैं, यह कुछ ऐसा है जो आपको सोने से रोकता है। उनका मानना था कि छोटा सोचने से ज्यादा व्यापक और रचनात्मक सोचना बेहतर है। आप जितने सपने देख सकते हैं उन्हें खोजें और उन्हें याद रखें। उनकी कुछ प्रेरणा बड़े शहरों के बजाय गांवों में प्रगति देखने की इच्छा से आती है। पंचायतें समुदाय की मदद करने का एक तरीका हुआ करती थीं। अब ऐसे सरकारी कार्यालय हैं जो यही काम करते हैं।

2. शोध अध्ययन के उद्देश्य:

डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम के शैक्षिणक विचारों की विज्ञान प्रौद्योगिकी में उपादेयता का अध्ययन“।

3. शोध अध्ययन की परिसीमाऐं:

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन डॉ. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों तक ही सीमित अध्ययन करेंगे।

2. प्रस्तुत अध्ययन में डॉ. अब्दुल कलाम के सभी साहित्यों का अध्ययन न करके महत्वपूर्ण ग्रंथों का ही अवलोकन किया जाएगा।

4. शोध निष्कर्ष:

डॉ. अब्दुल कलाम ने आधुनिक शिक्षा क्षेत्र में अपूर्व योगदान दिया है। शिक्षा एवं मनोवैज्ञानिक मूल्यों के विकास में उनके साहित्य में निहित तथ्य अत्यन्त सराहनीय है।

1. धार्मिक एकता पर बल देते हुए धार्मिक क्रिया कलापों में नियमितता को महत्वपूर्ण मानते है।

2. विपत्ति के समय कठोर परिश्रम करनी चाहिए विपति हमेशा आत्म विश्लेषण का अवसर प्रदान करती है।

3. समस्या के समाधान हेतु प्रयत्न करने वालों की हार नहीं होती है।

4. अपने माता-पिता का आशीर्वाद बहुत महत्वपूर्ण है और माता-पिता ही हमारे आदर्श है।

5. मनुष्य को अंहकार का त्याग करना अत्यन्त आवश्यक है।

6. सच्चे मनुष्य में परोपकारिता, मानवतावादी एवं धर्म निरपेक्षता के गुण होते है।

7. अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मेहनत करो और ईश्वर के समक्ष प्रार्थना करो।

8. जीवन में सादगी व विचारों में उच्चता होनी चाहिए।

9. मनुष्य में निर्णय शक्ति होनी चाहिए जिससे वह तुरन्त निर्णय ले सकें।

10. जो लोग जिम्मेदार, सरल, ईमानदार तथा मेहनती होते है, उन्हें इश्वर द्वारा विशोष सम्मान मिलता है। क्योंकि वे इस पृथ्वी पर उसकी श्रेप्ठ रचना है।

11. कम से कम दो गरीब बक्तियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उनकी शिक्षा प्राप्ति में मदद करो।

12. किसी के जीवन में उजाला लाओ।

13. दूसरों का आशीर्वाद प्राप्त करों, और अपने माता-पिता की सेवा करो, बड़ो तथा शिक्षकों का आदर करो और अपने देश से प्रेम करो, इनके बिना जीवन अर्थहीन है।

14. ईश्वर की सभी रचनाओं से प्यार करो।

15. देना सबसे उच्च व श्रेष्ठतम गुण हैं, परंतु पूर्णता देने के लिए उसके साथ क्षमा भी होनी चाहिए।

16. हमारे अन्दर ईश्वरीय सुन्दरता का प्रवेश होना चाहिए।

17. प्रत्येक क्षण रचनात्मकता का एक क्षण है। उसे व्यर्थ मत करो।

18. धैर्य तथा सहिष्णुता शक्ति है। उसे खोने मत दो।

19. प्रकृति से सीखों, जहाँ सब कुछ छिपा हुआ है और अपने जीवन को उद्देश्य पूर्ण तथा अर्थ पूर्ण बनाओ।।

20. ये आँखें इस दुनिया को फिर नहीं देख पाएंगी। अपना बेहतरीन देन का प्रयास्म करो।

5. शैक्षणिक विचार

कलाम का शैक्षिक दृष्टिकोण सीखने के लिए तर्क, कौशल और वैज्ञानिक सोच के उपयोग पर आधारित है। वैज्ञानिक राष्ट्रपति भारतीय समाज के बदलते भाग्य में रुचि रखते हैं, और वे कई क्षेत्रों में हुई प्रगति से बहुत प्रभावित हैं। वह सोचता है कि परिवर्तन की गति बहुत धीमी है और भारत में सभी लोगों को लाभान्वित करने के लिए और अधिक प्रगति की आवश्यकता है। यह दर्शन भारतीय शिक्षा की गुणवत्ता के विकास के लिए अच्छा है। कलाम का 4 लाख से अधिक स्कूली बच्चों के साथ व्यक्तिगत संपर्क रहा है, जिसने उन्हें भविष्य के लिए नए विचार और सपने दिए हैं। वह उनके नए विचारों को भी समझता है, जिससे उन्हें अपने शिक्षा दर्शन में शामिल करने में मदद मिली है। 20वीं सदी में कलाम ने शिक्षा में सुधार के लिए अपने विचार सामने रखे। उनका दृष्टिकोण तर्क और लक्ष्यों पर आधारित है जिसका उद्देश्य इसमें शामिल सभी लोगों को लाभ पहुंचाना है। सरकार भारतीय समाज को धीरे-धीरे विकसित होने में मदद करने के लिए पैसा दे रही है।

5.1 क्लाम का "विकसित भारत का सपना" के चार स्तम्भ है

1. उद्यमशीलता की गुणवत्ता में विकास हो।

2. युवा अनुसंधानकर्ता बनें व नवाचार करें एवं जिज्ञासु बने।

3. नागरिक अधिकारों व कत्व्यों का पालन करें। कलाम ने विद्यार्थियों के लिए एक शपथ तैयार की जिसे विद्या अध्ययन के दौरान विद्यार्थी ग्रहण करेगा।

4. हर शिक्षित व्यक्ति 10 अशिक्षतों को शिक्षित व साक्षर बनाएगा।

5. व्यक्ति किसी धर्म, जाति व भाषा के आधार पर भेदभाव नहीं करेंगा।

6. पुरुष प्रधान समाज स्त्री शिक्षा एवं अधिकारों को महत्व देंगे।

7. शारीरिक व मानसिक वाधिता से युक्त बच्चों व व्यक्तियों का समाज व परिवार में आदर व समन्वयन करें ताकि **“Knowledge Society”** समावेशित समाज हो सके।

कलाम के 79वें जन्मदिन को संयुक्त राष्ट्र द्वारा *विश्व विद्यार्थी दिवस* के रूप में मनाया गया था।

6. सन्दर्भ

1. बुच. एम. बीः थर्ड सर्वे आफ एजुकेशनल रिसर्च, वोल्यूम। 1978 - 1983
2. बुच. एम. बीः थिफ्थ सर्वे आफ एजूकेशनल रिसर्च, वोल्यूम। 1988 - 1992
3. राजस्थान में शिक्षाः सम्प्राप्तियों एवं सम्भावनाएँ। अनुसंधान 1975 - 1988
4. गुड कार्टन बी: एजुकेशन रिसर्च न्यूयार्क ऐप्टलन सेन्चुरी क्राफ्ट्स 1959।
5. कपिल एच. के. अनुसंधान विधियाँ एच.पी. भार्गव बुक हाऊस आगरा 1998-99।
6. माचवे प्रभाकर वः आधुनिक भारत के विचारक, बिहार, हिन्दी ग्रंथ दफ्तुआर अकादमी पटना, 1975 सुरेन्द्र नारायण।
7. टीचर्स जनरल
8. टीचर्स टुडे - नया शिक्षक
9. राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान - 2005
10. राजस्थान शिक्षा अनुसंधान - 2006
11. शिक्षा समस्या विशेषांक - साहित्य परिचय, 1969
12. शिविरा अक्टूबर – 2002